दैनिक जागरण
www.dainikjagranmpcg.com
भोपाल, 27 सितंबर 2025

सत्यकथा

नवरात्र पर्व विशेषांक : मां दुर्गा के 9 अवतार के 9 रहस्य

सर्वमङ्गलमाङ्ग्ल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

पहला रहस्य

36 रात्रियां नवरात्रि वर्ष के महत्वपूर्ण चार पवित्र माह में आती है। यह चार माह है। चैत्र, आषाढ़, अश्विन और पौष। चैत्र माह में चैत्र नवरात्रि जिसे बड़ी नवरात्रि या वसंत नवरात्रि भी कहते हैं। आषाढ़ और पौष माह की नवरात्रि को गुप्त नवरात्रि कहते हैं। अश्विन माह की नवरात्रि को शारदीय नवरात्रि कहते हैं।

दूसरा रहस्य

9 छिद्र : हमारे शरीर में 9 छिद्र हैं। दो आंख, दो कान, नाक के दो छिद्र, दो गुप्तांग और एक मुंह। उक्त नौ अंगों को पवित्र और शुद्ध करेंगे तो मन निर्मल होगा और छठी इंद्री को जाग्रत करेगा। नींद में यह सभी इंद्रियां या छिद्र लुप्त होकर बस मन ही जाग्रत रहता है। (वर्ष की 36 नवरात्रियों में उपवास रखने से अंग-प्रत्यंगों की पूरी तरह से भीतरी सफाई हो जाती है।)

तीसरा रहस्य

पूर्ण संयमः इन नौ दिनों में मद्यमान, मांस-भक्षण और स्त्रीसंग शयन वर्जित माना गया है। जो व्यक्ति ऐसा अपराध करता है निश्चित ही वह माता के प्रति असम्मान प्रकट करता है। उपवास में रहकर इन नौ दिनों में की गई हर तरह की साधनाएं और मनकामनाएं पूर्ण होती है।

चौथा रहस्य

पवित्र है ये रात्रियां नवरात्र शब्द से नव अहोरात्र अर्थात विशेष रात्रियों का बोध होता है। इन रात्रियों में प्रकृति के बहुत सारे अवरोध खत्म हो जाते हैं। दिन की अपेक्षा यदि रात्रि में आवाज दी जाए तो वह बहुत दूर तक जाती है। इसीलिए इन रात्रियों में सिद्धि और साधना की जाती है। (इन रात्रियों में किए गए शुभ संकल्प सिद्ध होते हैं।)

पांचवां रहस्य

9 देवियां : शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कुष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धिदात्री का पूजन विधि विधान से किया जाता है। कहते हैं कि कात्यायनी ने ही महिषासुर का वध किया था इसलिए उन्हें महिषासुरमर्दिनी भी कहते हैं।

छटा रहस्य

नौ भोग और औषधि : शैलपुत्री कुट्टू और हरड़, ब्रह्मचारिणी दूध-दही और ब्राह्मी, चन्द्रघंटा चौलाई और चन्दुसूर, कूष्मांडा पेठा, स्कंदमाता श्यामक चावल और अलसी, कात्यायनी हरी तरकारी और मोइया, कालरात्रि कालीमिर्च, तुलसी और नागदोन, महागौरी साबूदाना तुलसी, सिद्धिदात्री आंवला और शतावरी।

सातवां रहस्य

अलग अलग देवियां: देवियों में त्रिदेवी, नवदुर्गा, दशमहाविद्या और चौसठ योगिनियों का समूह है। आदि शक्ति अम्बिका सर्वोच्च है और उसी के कई रूप हैं। सती, पार्वती, उमा और काली माता भगवान शंकर की पत्नियां हैं।

आठवां रहस्य

दशमहाविद्याएं : नवदुर्गा में दशमहाविद्याओं की भी पूजा होती है। इनके नाम है-1. काली, 2. तारा, 3. छिन्नमस्ता, 4. षोडशी, 5. भुवनेश्वरी, 6. त्रिपुरभैरवी, 7. धूमावती, 8. बगलामुखी, 9. मातंगी और 10 कमला।

नौवां रहस्य

देवियों की पहचानः प्रत्येक देवी को उनके वाहन, भुजा और अस्त्र-शस्त्र से पहचाना जाता है। जैसे अष्टभुजाधारी देवी दुर्गा और कात्यायनी सिंह पर सवार हैं तो माता पार्वती, चन्द्रघंटा और कुष्मांडा शेर पर विराजमान हैं। शैलपुत्री और महागौरी वृषभ पर, कालरात्रि गधे पर और सिद्धिदात्री कमल पर विराजमान हैं। (इसी तरह सभी देवियों की अलग अलग सवारी हैं।)

उदयपुर

यहां हर वर्ष जलकर राख हो जाता है माता का मंदिर लेकिन प्रतिमा पर नहीं आती आंच

उदयपुर की माता ईडाणा

माता का ऐसा चमत्कारी मंदिर, हर साल होता अग्निस्नान, सब कुछ जल जाता लेकिन मूर्ति पर आंच तक नहीं आती। देश में माताजी के कई ऐसे मंदिर हैं, जहां आज भी ऐसे चत्मकार होते हैं, जिनका जवाब विज्ञान के पास भी नहीं है।

पूरे देश में इस समय नवरात्रि की धूम है। जगह-जगह मां की आराधना में लोग लगे हैं। बड़े-बड़े पंडाल बन रहे हैं। मां की मंदिरों में भक्तों की भारी भीड़ जुटी रही है। देश के अलग-अलग हिस्सों से मां की चमत्कारिक मंदिरों की कहानी भी सामने आ रही है। इसी कड़ी में आज हम आपको बताने जा रहे हैं मां दुर्गा के एक चमत्कारिक मंदिर के बारे में जहां की कहानी आपकी विस्मृत कर देगी। यह कहानी है मां के उस मंदिर की जहां हर साल अग्निस्नान होता है। इस दौरान मंदिर का सारा कुछ जल जाता है। लेकिन मां की मूर्ति को कुछ नहीं होता। आइए जानते हैं मां का यह चमत्कारी मंदिर कहां है और इसकी क्या कहानी है।।।

मां का यह चमत्कारी मंदिर राजस्थान के उदयपुर जिले में है। इस मंदिर का नाम ईडाणा माता मंदिर है। इस मंदिर में हर साल अपने-आप माता का अग्निस्नान होता है, जिसमें माता की मूर्ति को छोड़कर और कुछ भी शेष नहीं बचता। इसे ईडाणा माता के अग्नि स्नान के नाम से जाना जाता है।

यह मंदिर उदयपुर शहर से 60 किमी दूर अरावली की पहाड़ियों में स्थित है। इस मंदिर में कभी भी माताजी के समीप से आग लग जाती है। ऐसा माना जाता है कि जब माताजी बहुत प्रसन्न होती हैं तो वह अग्नि स्नान करती हैं। या माताजी पर अधिक भार होता है तो माता अग्नि स्नान करती है।

मंदिर के अंदर मौजूद हर एक चीज, चाहे वह माता की चुनरी ही क्यों न हो, या भक्तों द्वारा चढ़ाया गया भोग-प्रसाद हो, सब कुछ जलकर राख हो जाता है। केवल माता की मूर्ति ही बचती है। यह भी कहा जाता है कि माता के अग्नि स्नान के बाद यहां की आग अपने-आप बुझ जाती है।

इस अग्निस्नान को देखने के लिए भक्तों की भारी भीड़ लग जाती है। आज तक कोई भी इस बात का पता नहीं लगा पाया कि यह आग कैसे लगती है। जो भी भक्त माता के अग्नि स्नान के दर्शन कर लेता है, वह अपने आप को धन्य समझता है।

ईडाणा माता का कोई मन्दिर परिसर नहीं है, बरगद के पेड़ के नीचे खुले आसमान के नीचे माता बिराजी हैं। जैसे ही माता रानी अग्नि स्नान करती है तो दर्शन करने के लिए भक्तों की भीड़ जमा हो जाती है। यहां उत्सव जैसा माहौल हो जाता है। माता के जयकारों की गूंज उठती है। मंदिर पूरा खुला हुआ है और माताजी विराजमान है। मान्यता है कि सदियों पहले पांडव यहाँ से गुजरे थे जिन्होंने भी माता की पूजा अर्चना की थी।

शेष पृष्ठ 7 पर...

अग्निस्नान के दौरान माता की चुनरी, भक्तों का प्रसाद तक हो जाता राख

मंदिर के अंदर मौजूद हर एक चीज, चाहे वह माता की चुनरी ही क्यों न हो, या भक्तों द्वारा चढ़ाया गया भोग-प्रसाद हो, सब कुछ जलकर राख हो जाता है। केवल माता की मूर्ति ही बचती है। यह भी कहा जाता है कि माता के अग्नि स्नान के बाद यहां की आग अपने-आप बुझ जाती है।

नौ साल से चल रहा है भंडारा

मन्दिर के ठीक पास मेला ग्राउंड में पिछले 9 साल से लगातार मेघचंदन फाउंडेशन की ओर से साल में दो बार भंडारा लगाया जाता है। मेघ फाउंडेशन के गंगासिंह ने बताया कि इस साल 18 वां भंडारा लगाया गया है। गंगासिंह ने यह भी बताया कि 2014 में पूर्व न्यायाधिपति करणी सिंह के पुत्र कुलदीप सिंह ने यह भंडारा शुरू किया था।

पांडवों ने की थी माता की पूजा

मंदिर पूरा खुला हुआ है और माताजी विराजमान है। मान्यता है कि सदियों पहले पांडव यहाँ से गुजरे थे जिन्होंने भी माता की पूजा अर्चना की थी। ईडाणा माता को स्थानीय पूर्व राजा, रजवाड़े अपनी कुलदेवी के रूप में मानते हैं ओर आज भी उनकी पूजा अर्चना करके अपने शुभ कार्यों का शुभारंभ करते हैं। माता के इस मंदिर में श्रद्धालु चढ़ावे में लच्छा चुनरी और त्रिशूल लाते हैं। लोगों की मान्यता है कि इस मंदिर में जाकर माता के दर्शन करने से पैरालिसिस यानी लकवे जैसी गंभीर बीमारी भी ठीक हो जाती है। जिन लोगों के संतान नहीं होती वह दंपती यहां झूला चढ़ाते हैं। इससे उन्हें संतान सुख की प्राप्ति होती है।

यहां गिरी थी सती माता की जीभ

कहा जाता है कि सती के रूप में जानी जाने वाली आदिशक्ति, प्रथम शक्ति भगवान शिव की पत्नी बनी। एक बार सती के पिता ने भगवान शिव का अपमान किया, सती को यह स्वीकार नही हुआ तो उसने खुद को हवन कुंड मे भस्म कर डाला। भगवान शिव ने जब अपनी पत्नी की मृत्यु के बारे में सुना तो उनके गुस्से कोप दुनिया का सहना पड़ा। उन्होंने सती के

पार्थिव शरीर को उठाकर तीनों लोकों में भ्रमण करना शुरू किया। देवता शिव के क्रोध से कांप उठे और भगवान विष्णु से मदद मांगी। भगवान विष्णु ने सती के शरीर को चक्र के वार से खंडित कर दिया। जिन स्थानों पर टुकड़े गिरे, उन स्थानों पर 52 पवित्र 'शक्तिपीठ' अस्तित्व में आए। ज्वालामुखी में सती की जीभा गिरी थी ओर देवी छोटी लपटों के रूप में प्रकट हुई। कहा जाता है कि सदियों पहले, एक चरवाहे ने देखा कि अमुक पर्वत से ज्वाला निकल रही है। ज्वालाजी को जोता वाली मंदिर भी कहा जाता है।

ग्वालियर

निःसंतान दंपति द्वारा यहां पालना झुलाने से पूरी होती है संतान की इच्छा

ग्वालियर शहर से 20 किलोमीटर दूर घने जंगल में सातऊ गांव की सात पहाड़ियों के बीच विराजमान मां शीतला की कहानी बड़ी ही अद्भुत है। लोग बताते हैं घना जंगल होने के कारण यहां मंदिर के आसपास शेर अक्सर मिल जाया करते थे, लेकिन कभी भक्तों पर हमला नहीं किया।

शीतला माता

ग्वालियर शहर से 20 किलोमीटर दूर घने जंगल में सातऊ गांव की सात पहाड़ियों के बीच विराजमान मां शीतला की कहानी बड़ी ही अद्भुत है। लोग बताते हैं घना जंगल होने के कारण यहां मंदिर के आसपास शेर अक्सर मिल जाया करते थे, लेकिन कभी भक्तों पर हमला नहीं किया। असल में 1669 विक्रम संवत (सन् 1726 ई) में मां शीतला भिंड के गोहद खरौआ गांव के जंगल से भक्त और इस मंदिर की पूजा अर्चना करने वाले पहले महंत गजाधर बाबा के साथ कन्या रूप में ग्वालियर के सातऊ के जंगल में आ बसी थीं। जहां आकर माता विलुप्त हुईं वहां उनका आज विशाल मंदिर है। कभी यहां पत्थर के सात टुकड़े हुआ करते थे।

कहते हैं जंगल में होने के कारण इन्हें डकैतों की देवी भी कहा जाता है। यहां डकैत घंटा चढ़ाने आते थे। मां शीतला के दरबार में डकैत और पुलिस सभी सिर झुकाते थे। यहां हर मनोकामना पूरी होती है, लेकिन सबसे अजीब परम्परा यहां झूला झुलाने से सूनी गोद भरना और पहाड़ी पर पत्थरों से प्रतीकात्मक मकान बनाने से अपने घर का सपना मां पूरा करती है।

महंत कमलसिंह भगत जी बताते हैं कि माता के सबसे पहले भक्त उनके परदादा गजाधर बाबा थे। वह सातऊ गांव से होकर रोज गायों को लेकर भिंड के गोहद स्थित खरौआ के जंगल में जाते थे। यहां जंगल में प्राचीन मंदिर पर रोज गाय के ताजा दूध से मां का अभिषेक करते थे। गजाधर की भक्ति से प्रसन्न होकर सन् 1669 विक्रम संवत में मां ने उन्हें कन्या रूप में दर्शन दिए और साथ चलने के लिए कहा।

गजाधर ने माता से कहा कि उनके पास कोई साधन नहीं है, वह उन्हें अपने साथ कैसे ले जा पाएगा। तब माता ने कहा कि वह जब उनका ध्यान करेंगे और वह प्रकट हो जाएंगी। गजाधर ने सातऊ गांव पहुंचकर माता का आवाहन किया तो देवी प्रकट हो गईं और गजाधर से कहा कि जहां में विलुप्त हो जाऊं वहां मंदिर बनवा देना। इसके बाद कन्या रूप में मां सातऊ के जंगल में जाकर विलुप्त हो गईं। जहां माता विलुप्त हुईं, वहां पांच पत्थर मिले थे। इसके बाद इन पत्थर को समेटकर मां का स्वरूप दिया गया। तभी से जंगल में पहाड़ी पर मां शीतला विराजमान हैं। सातऊ गांव पहुंची तो मां शीतला के यहां विराजमान होने की पैराणिक कथा के संबंध में महंत कमलसिंह भगत जी बताते हैं कि माता के सबसे पहले भक्त उनके परदादा गजाधर बाबा थे। वह सातऊ गांव से होकर रोज गायों को लेकर भिंड के गोहद स्थित खरौआ के जंगल में जाते थे।

शेष पृष्ठ 7 पर...

हर दिन एक लाख भक्त पहुंचते हैं

वैसे तो शीतला माता मंदिर पर हर दिव एक से डेढ़ हजार लोग पहुंचते हैं, लेकिन सोमवार को यहां मेला लगता है। सोमवार को यहां 20 से 25 हजार लोग पहुंचते हैं। महंत कमल सिंह भगत बताते हैं कि नवदुर्गा उत्सव के दिनों में यहां हर दिन 90 हजार से एक लाख लोग आते हैं। नौ दिन में लाखों भक्त यहां दर्शन करते हैं। महंत कमलसिंह बताते हैं कि 300 से 400 साल पहले जब मां इस स्थान पर विलुप्त हुई थीं, तब पहाड़ी पर एक पेड़ के नीचे मंदिर की स्थापना हुई। उसके बाद धीरे-धीरे मां की कृपा से मंदिर का विस्तार होता चला गया। आजतक किसी से कोई चंदा नहीं लिया। भक्त जो चढ़ावा दे जाते हैं उसे ही मंदिर के विकास में लगा देते हैं।

पैदल आते हैं भक्त, पूरी होती है मनोकामना

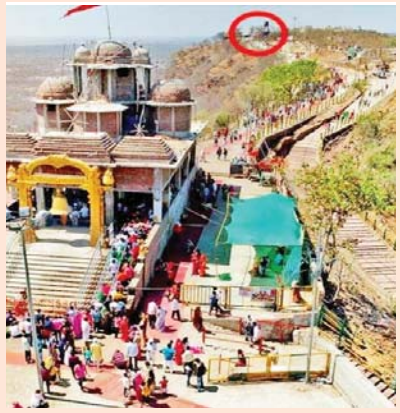

ग्वालियर से 20 किलोमीटर दूर जंगल में विराजमान मां शीतला के दर्शन करने के लिए लोग दूर-दूर से पैदल आते हैं। ऐसा माना जाता है कि लोग पहले मां शीतला पर आकर मन्नत मांगते हैं और मन्नत पूरी होने के बाद पैदल परिक्रमा करते थे। करीब 40 से 50 किलोमीटर दूर से लोग पैदल आकर मां के दर्शन करते हैं। मां शीतला पर आने वाले अलग-अलग तरह की मनोकामना मांगते हैं। जिस पहाड़ी पर मां विराजमान हैं वहां पहाड़ी पर भक्त मां के दर्शन करने के बाद अपने सपनों का घर पत्थरों से बनाकर जाते हैं। कोई तीन मंजिल तो

कोई दो मंजिल बनाकर जाता है। कोई टाउनशिप तो कोई बंगला का आकार देकर जाता है। एक तरह से यह मां से कामना होती है कि मां उनको असल रूप में उनके सपनों का घर बनाने में मदद करेंगी। जब जिसकी मन्नत पूरी हो जाती है तो वह जहां भी रहता है वहां से पैदल ही नंगे पैर मां के दर्शन के लिए निकल पड़ता है।

उज्जैन

महाभारत काल के मंदिर में सतयुग की प्रतिमा

माता गढ़कालिका

तांत्रिकों की देवी कालिका के इस चमत्कारिक मंदिर की प्राचीनता के विषय में कोई नहीं जानता, फिर भी माना जाता है कि इसकी स्थापना महाभारतकाल में हुई थी, लेकिन मूर्ति सतयुग के काल की है। लिंग पुराण में कथा है कि जिस समय रामचंद्रजी युद्ध में विजयी होकर अयोध्या जा रहे थे, वे रुद्रसागर तट के निकट ठहरे थे। इसी रात्रि को भगवती कालिका भक्ष्य की शोध में निकली हुईं इधर आ पहुंचीं और हनुमान को पकड़ने का प्रयत्न किया, परंतु हनुमान ने महान भीषण रूप धारण कर लिया। तब देवी डरकर भागीं। उस समय अंश गालित होकर पड़ गया। जो अंश पड़ा रह गया, वही स्थान कालिका के नाम से विख्यात है।

मध्यप्रदेश के उज्जैन के कालीघाट स्थित कालिका माता के प्राचीन मंदिर को गढ़ कालिका के नाम से जाना जाता है। देवियों में कालिका को सबसे महत्वपूर्ण माना गया है। गढ़ कालिका के मंदिर में मां कालिका के दर्शन के लिए रोज हजारों भक्तों की भीड़ जुटती है।

सती की प्रतिमाएं भी बनी हैं

इसी मंदिर के निकट ही गणेश जी और हनुमान मंदिर है, वहीं विष्णु की सुंदर चतुर्मुख प्रतिमा मौजूद है। गणेशजी के निकट ही से थोड़ी दूर पर शिप्रा नदी है और घाट पर कई सती की प्रतिमाएं हैं। उज्जैन में जो सतियां हुईं हैं, उनका ही यहां स्मारक बनाया गया है। नदी के उस पार उखरेश्वर नामक प्रसिद्ध श्मशान-स्थली भी है। इस मंदिर पर नवरात्रि में विशेष मेला लगता है और तंत्र साधाना की जाती है।

तांत्रिकों की देवी कालिका के इस चमत्कारिक मंदिर की प्राचीनता के विषय में कोई नहीं जानता, फिर भी माना जाता है कि इसकी स्थापना महाभारतकाल में हुई थी, लेकिन मूर्ति सतयुग के काल की है। बाद में इस प्राचीन मंदिर का जीर्णोद्धार सम्राट हर्षवर्धन द्वारा किए जाने का उल्लेख मिलता है। स्टेटकाल में ग्वालियर के महाराजा ने इसका पुनर्निर्माण कराया।

कालिकाजी के इस स्थान पर गोपाल मंदिर से सीधे यहां जाया जा सकता है। गढ़ नामक स्थान पर होने के कारण गढ़ कालिका हो गया है। मंदिर के प्रवेश-द्वार के आगे ही सिंह वाहन की प्रतिमा बनी हुई है। आसपास दो तरफ धर्मशालाएं हैं। इसके बीच में देवीजी का मंदिर है। मंदिर के कुछ अंश का जीर्णोद्धार ई.सं. 606 के लगभग सम्राट श्रीहर्ष ने करवाया था। शक्ति-संगम-तंत्र में 'अवन्ति संज्ञके देश कालिका तंत्र विष्ठति' कालिका का उल्लेख है।

वैसे तो गढ़ कालिका का मंदिर शक्तिपीठ में शामिल नहीं है, किंतु उज्जैन क्षेत्र में मां हरसिद्धि शक्तिपीठ होने के कारण इस क्षेत्र का महत्व बढ़ जाता है। पुराणों में उल्लेख मिलता है कि उज्जैन में शिप्रा नदी के तट के पास स्थित भैरव पर्वत पर मां भगवती सती के ओष्ठ गिरे थे।

लिंग पुराण में कथा है कि जिस समय रामचंद्रजी युद्ध में विजयी होकर अयोध्या जा रहे थे, वे रुद्रसागर तट के निकट ठहरे थे। इसी रात्रि को भगवती कालिका भ क्ष्य

की शोध में निकली हुईं इधर आ पहुंचीं और हनुमान को पकड़ने का प्रयत्न किया, परंतु हनुमान ने महान भीषण रूप धारण कर लिया। तब देवी डरकर भागीं। उस समय अंश गालित होकर पड़ गया। जो अंश पड़ा रह गया, वही स्थान कालिका के नाम से विख्यात है।

इसी मंदिर के निकट लगा हुआ स्थिर गणेश का प्राचीन और पौराणिक मंदिर है। इसी प्रकार गणेश मंदिर के सामने भी एक हनुमान मंदिर प्राचीन है, वहीं विष्णु की सुंदर चतुर्मुख प्रतिमा है। खेत के बीच में गोरे भैरव का स्थान भी प्राचीन है। गणेशजी के निकट ही से थोड़ी दूर पर शिप्रा की पुनीत धारा बह रही है। इस घाट पर अनेक सती की मूर्तियां हैं। उज्जैन में जो सतियां हुईं हैं; उनका स्मारक स्थापित है। नदी के उस पार उखरेश्वर नामक प्रसिद्ध श्मशान-स्थली है। मंदिर के आगे जानने पर गुरु मत्स्येंद्रनाथ का समाधि स्थल भी है।

गढ़कालिका मंदिर में कपड़े के बनाए गए नरमुंड चढ़ाए जाते हैं। प्रसाद के रूप में दशहरे के दिन नींबू बांटा जाता है। इस मंदिर में तांत्रिक क्रिया के लिए कई तांत्रिक मंदिर में आते हैं। इन नौ दिनों में माता कालिका अपने भक्तों को अलग-अलग रूप में दर्शन देती हैं। कालिदास मां के उपासक रहे हैं। ऐसी मान्यता है कि एक बार कालिदास पेड़ की जिस डाल पर बैठे थे उसी को काट रहे थे। इस घटना पर उनकी पत्नी विद्योत्तमा ने उन्हें फटकार लगाई, जिसके बाद कालिदास ने मां गढ़कालिका की उपासना की। वे इतना ज्ञानी हो गए कि उन्होंने कई महाकाव्यों की रचना कर दी और उन्हें महाकवि का दर्जा मिल गया। कालिदास के संबंध में मान्यता है कि जब से वे इस मंदिर में पूजा-अर्चना करने लगे तभी से उनके प्रतिभाशाली व्यक्तित्व का निर्माण होने लगा। उज्जैन में प्रत्येक वर्ष होने वाले कालिदास समारोह के आयोजन के पूर्व मां कालिका की आराधना की जाती है।

नरमुंडों की माला पहनाई जाती है

गढ़कालिका माता को नरमुंडों की माला पहनाई जाती है। मंदिर परिसर में ही कपड़े से बने नरमुंड और नींबू की माला मिलती है। नवरात्रि पर्व समाप्त होने के बाद दशहरे के दिन मंदिर से प्रसाद के रूप नींबू बांटे जाते हैं। मान्यता है कि घर में ये नींबू रखने से सुख शांति बनी रहती है।

महाकवि की आराध्य हैं गढ़ कालिका

ऐसी मान्यता है कि एक बार कालिदास पेड़ की जिस डाल पर बैठे थे उसी को काट रहे थे। इस घटना पर उनकी पत्नी विद्योत्तमा ने उन्हें फटकार लगाई, जिसके बाद कालिदास ने मां गढ़कालिका की उपासना की। वे इतना ज्ञानी हो गए कि उन्होंने कई महाकाव्यों की रचना कर दी और उन्हें महाकवि का दर्जा मिल गया। कालिदास के संबंध में मान्यता है कि जब से वे इस मंदिर में पूजा-अर्चना करने लगे तभी से उनके प्रतिभाशाली व्यक्तित्व का निर्माण होने लगा। उज्जैन में प्रत्येक वर्ष होने वाले कालिदास समारोह के आयोजन के पूर्व मां कालिका की आराधना की जाती है।

प्राचीन काल में कालिका को लगाया जाता था मदिरा का भोग

गढ़कालिका मंदिर के सेवक जयंत नागर बताते हैं कि विक्रम और बेताल का किस्सा भी इसी क्षेत्र से जुड़ा हुआ है। माता गढ़ कालिका मंदिर के आसपास के कुछ इलाकों में बेताल से जुड़े कुछ किस्से काफी प्रसिद्ध हैं।नगर के मुताबिक में लंबे समय से माता की सेवा कर रहे हैं।यहां दर्शन करने मात्र से ही सारी मनोकामना पूरी हो जाती हैं।देशभर के श्रद्धालु माता गढ़ कालिका का आशीर्वाद लेने के लिए आते हैं।नवरात्रि के दौरान हजारों की संख्या में भक्तों का तांता लगा रहता है। मंदिर से जुड़े लोग बताते हैं कि पुराने समय में मंदिर में माता को मदिरा का भोग लगाकर तामसी पूजा भी की जाती थी। यह सिलसिला अब बंद हो गया है। अब यहां पर केवल सात्विक पूजा ही की जाती है।

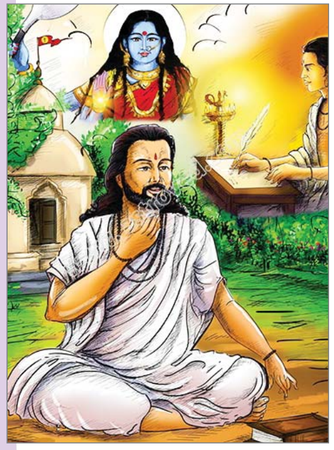

पकड़ने का प्रयत्न किया, परंतु हनुमान ने महान भीषण रूप धारण कर लिया। तब देवी डरकर भागीं। उस समय अंश गालित होकर पड़ गया। जो अंश पड़ा रह गया, वही स्थान कालिका के नाम से विख्यात है।

इसी मंदिर के निकट लगा हुआ स्थिर गणेश का प्राचीन और पौराणिक मंदिर है। इसी प्रकार गणेश मंदिर के सामने भी एक हनुमान मंदिर प्राचीन है, वहीं विष्णु की सुंदर चतुर्मुख प्रतिमा है। खेत के बीच में गोरे भैरव का स्थान भी प्राचीन है। गणेशजी के निकट ही से थोड़ी दूर पर शिप्रा की पुनीत धारा बह रही है। इस घाट पर अनेक सती की मूर्तियां हैं। उज्जैन में जो सतियां हुई हैं उनका स्मारक स्थापित है। नदी के उस पार उखरेश्वर नामक प्रसिद्ध श्मशान-स्थली है। यहां पर नवरात्रि में लगने वाले मेले के अलावा भिन्न-भिन्न मौकों पर उत्सवों और यज्ञों का आयोजन होता रहता है। मां कालिका के दर्शन के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं।

• • •

सतगुण काल का मंदिर में तंत्र साधना सिद्ध करते हैं

इस मंदिर का जीर्णोद्धार सम्राट हर्षवर्धन ने किया था बाद में ग्वालियर के महाराजा ने इसका पुनर्निर्माण कराया था। इस मंदिर में प्रवेश द्वार के आगे सिंह की प्रतिमा है और इसके आसपास धर्मशालाएं हैं, जिसमें पुरातन समय में पथिक या तांत्रिक आकर मां की पूजा किया करते थे। धर्मशाला के बीच देवी मंदिर हैं। शक्ति-संगम-तंत्र में 'अवन्ति संज्ञके देश कालिका तंत्र विष्ठति' कालिका का उल्लेख भी है।

हुनमान जी से डर गई थीं कालिका माता

हालांकि गढ़ कालिका का मंदिर शक्तिपीठ में शामिल नहीं है,लेकिन उज्जैन क्षेत्र में मां हरसिद्धि शक्तिपीठ होने के कारण इस क्षेत्र का महत्व बढ़ गया है। पुराणों में लिखा है कि उज्जैन में शिप्रा नदी के तट के पास स्थित भैरव पर्वत पर मां भगवती सती के होंठ गिरे थे। वहीं लिंग पुराण में लिखा है कि रामचंद्रजी जब रावण का

वध कर अयोध्या लौट रहे थे तो रात में रुद्र सागर तट पर रुके थे। उधर रात में भगवती कालिका अपने भोजन के तलाश में निकली थी तभी उनकी नजर हनुमान जी पर पड़ी वे उनको खाने के लिए आगे बढ़ने लगी तभी अचानक हनुमान जी ने अपना विशाल रूप धारण कर लिया। यह देखते ही देवी वहां से डर का भागने लगीं। उस समय उनका अंश वहीं गिर गया और उसी स्थान पर बाद में कालिका मंदिर का निर्माण हुआ।

महाकाल मिलने आते हैं मां से

सावन-भादो के महीने में निकलने वाली महाकाल की सात सवारी में नगर भ्रमण पर निकलने के दौरान भगवान महाकाल मां हरसिद्धि से मिलने आते हैं। इस मौके पर आरती व आतिशबाजी की जाती है।

प्रसिद्ध है 3 चमत्कार

तांत्रिकों की देवी कालिका के इस चमत्कारिक मंदिर की प्राचीनता के विषय में कोई नहीं जानता, फिर भी माना जाता है कि इसकी स्थापना महाभारतकाल में हुई थी, लेकिन मूर्ति सतयुग के काल की है। बाद में इस प्राचीन मंदिर का जीर्णोद्धार सम्राट हर्षवर्धन द्वारा किए जाने का उल्लेख मिलता है। मंदिर के कुछ अंश का जीर्णोद्धार ई.सं. 606 के लगभग सम्राट श्रीहर्ष ने करवाया था। स्टेटकाल में ग्वालियर के महाराजा ने इसका पुनर्निर्माण कराया। कालिकाजी के इस स्थान पर गोपाल मंदिर से सीधे यहां जाया जा सकता है।

उज्जैन में दो शक्तिपीठ माने गए हैं पहला हरसिद्धि माता और दूसरा गढ़कालिका माता का शक्तिपीठ। पुराणों में उल्लेख मिलता है कि उज्जैन में शिप्रा नदी के तट के पास स्थित भैरव पर्वत पर मां भगवती सती के ओष्ठ गिरे थे। कहते हैं कि हरसिद्धि का मंदिर वहां स्थित है जहां सती के शरीर का अंश अर्थात हाथ की कोहनी आकर गिर गई थी। अतः इस स्थल को भी

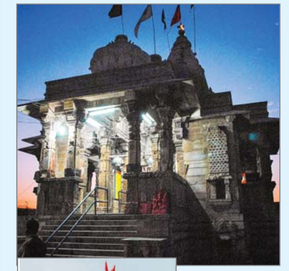

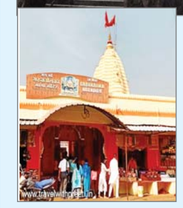

शक्तिपीठ के अंतर्गत माना जाता है। इस देवी मंदिर का पुराणों में भी वर्णन मिलता है।

लिंग पुराण में कथा है कि जिस समय रामचंद्रजी युद्ध में विजयी होकर अयोध्या जा रहे थे, वे रुद्रसागर तट के निकट ठहरे थे। इसी रात्रि को भगवती कालिका भक्ष्य की शोध में निकली हुईं इधर आ पहुंचीं और हनुमान को पकड़ने का प्रयत्न किया, परंतु हनुमान ने महान भीषण रूप धारण कर लिया। तब देवी वहां से चली गई। जाते समय अंश गालित होकर पड़ गया। जो अंश पड़ा रह गया, वही स्थान कालिका के नाम से विख्यात है।

इसी मंदिर के निकट लगा हुआ स्थिर गणेश का प्राचीन और पौराणिक मंदिर है। इसी प्रकार गणेश मंदिर के सामने भी एक हनुमान मंदिर प्राचीन है, वहीं विष्णु की सुंदर चतुर्मुख प्रतिमा है। खेत के बीच में गोरे भैरव का स्थान भी प्राचीन है। गणेशजी के निकट ही से थोड़ी दूर पर शिप्रा की पुनीत धारा बह रही है। इस घाट पर अनेक सती की मूर्तियां हैं। उज्जैन में जो सतियां हुई हैं; उनका स्मारक स्थापित है। नदी के उस पार उखरेश्वर नामक प्रसिद्ध श्मशान-स्थली है। मंदिर के आगे जानने पर गुरु मत्स्येंद्रनाथ का समाधि स्थल भी है।

गढ़कालिका मंदिर में कपड़े के बनाए गए नरमुंड चढ़ाए जाते हैं। प्रसाद के रूप में दशहरे के दिन नींबू बांटा जाता है। इस मंदिर में तांत्रिक क्रिया के लिए कई तांत्रिक मंदिर में आते हैं। इन नौ दिनों में माता कालिका अपने भक्तों को अलग-अलग रूप में दर्शन देती हैं। कालिदास मां के उपासक रहे हैं। ऐसी मान्यता है कि एक बार कालिदास पेड़ की जिस डाल पर बैठे थे उसी को काट रहे थे। इस घटना पर उनकी पत्नी विद्योत्तमा ने उन्हें फटकार लगाई, जिसके बाद कालिदास ने मां गढ़कालिका की उपासना की। वे इतना ज्ञानी हो गए कि उन्होंने कई महाकाव्यों की रचना कर दी और उन्हें महाकवि का दर्जा मिल गया। कालिदास के संबंध में मान्यता है कि जब से वे इस मंदिर में पूजा-अर्चना करने लगे तभी से उनके प्रतिभाशाली व्यक्तित्व का निर्माण होने लगा। उज्जैन में प्रत्येक वर्ष होने वाले कालिदास समारोह के आयोजन के पूर्व मां कालिका की आराधना की जाती है।

तंत्र क्रिया का प्रमुख केंद्र

तांत्रिकों की देवी कालिका के इस चमत्कारिक मंदिर की प्राचीनता के विषय में कई लोग नहीं जानते। माना जाता है कि इसकी स्थापना महाभारत काल में हुई थी, लेकिन मूर्ति सतयुग के काल की बताई जाती है। पंडित श्याम तिवारी ने बताया कि महाकवि कालिदास को ज्ञान इसी मंदिर से मिला था। यह मंदिर सिद्धपीठ है यहां तांत्रिक क्रिया का अपना महत्व है। गढ़कालिका को तंत्र की देवी माना जाता है। चैत्र की नवरात्रि में भी रोजाना तांत्रिकों का मेला इस मंदिर में दिखाई देता है। यहां खासकर मध्य प्रदेश, गुजरात, आसाम, पश्चिम बंगाल सहित कई राज्यों के तांत्रिक मंदिर में तंत्र क्रिया करने आते हैं।

विक्रमादित्य की हरसिद्धी माता

उज्जैन में करीब दो हजार साल पुराना हरसिद्धि मां देश के 51 शक्तिपीठों में से है। हरसिद्धि माता उज्जैन के राजा विक्रमादित्य की आराध्य देवी हैं। हरसिद्धि माता मंदिर की छत पर श्रीयंत्र बना हुआ है। मंदिर में दो स्तंभों पर ग्यारह सौ एक दीप जलाए जाते हैं। इसी स्थान के पीछे भगवती अन्नपूर्णा की सुंदर प्रतिमा है। तंत्र साधना के लिए भी मां हरसिद्धि की आराधना की जाती है।

मंदिर के एक पुजारी ने बताया शास्त्रों मे प्रचलित कथा के अनुसार माता सती के पिता राजा दक्ष ने एक यज्ञ का आयोजन किया था। जिसमें सारे देवी-देवता को आमंत्रित किया गया। इस यज्ञ में उनके दामाद भगवान शिव को यज्ञ में नहीं बुलाया गया। जब ये बात माता सती को पता चली तो उन्हें शिव का ये अपमान सहन नहीं हुआ और अपने आप को अग्नि के हवाले कर दिया। ये सब देख भगवान शिव माता सती का मृत शरीर उठाकर पृथ्वी के चक्कर लगाने लगे। शिव को रोकने के लिए भगवान विष्णु ने सुदर्शन चक्र चलाकर माता सती के अंग के 51 टुकड़े कर दिए। जहां-जहां माता सती के शरीर टुकड़े गिरे वहां-वहां शक्ति पीठों का निर्माण हुआ। मान्यता है कि उज्जैन के इस स्थान पर सती माता की कोहनी गिरी थी। इस

मंदिर का नाम हरसिद्धि पड़ा। मां हरसिद्धि उज्जैन के राजा रहे विक्रमादित्य की आराध्य देवी हैं। इस मंदिर में राजा विक्रमादित्य रोज आते थे। परिसर में दो दीप स्तम्भ हैं, जिसमें 1101 दीपक जलते हैं। शाम को आरती के समय दीप प्रज्वलित किए जाते हैं। इन दीपों को प्रज्वलित करने के लिए करीब 60 किलो तेल लगता है। चार लोग मिलकर एक साथ दीपों में पहले रुई लगाकर तेल भरते हैं और जब आरती शुरू होती है तब एक साथ दीपों को प्रज्वलित कर देते हैं। इस पूरी प्रक्रिया में करीब 2 घंटे का समय लगता है। इन जलते हुए दीप स्तम्भों को देखने के लिए भी श्रद्धालु दूर-दूर से उज्जैन पहुंचते हैं। दीपक का तेल देने के लिए भक्त साल भर का इंतजार करते हैं। दीपमाला में तेल देने के लिए नवरात्रि के करीब एक माह पहले ही पूरे नौ दिन की बुकिंग हो जाती है।

कांगडा हिमाचल प्रदेश

यहां होती है धरती से निकल रही 9 रहस्यमयी ज्वालाओं की पूजा

माता जोता वाली

विश्व प्रसिद्ध इस शक्तिपीठ श्री ज्वालामुखी मंदिर में यह 9 ज्योतियां सदियों से बिना जोत, बाती, घी और तेल के धधक रही हैं। माना जाता है कि चमत्कारी ज्योतियों के रुप में मां ज्वाला खुद दर्शन देती हैं। अब यह श्रद्धा है या चमत्कार, आस्था है या अंधविश्वास, रहस्य आज तक अनसुलझा है। इसका रहस्य आज तक न अंग्रेज लगा पाए और न ही वैज्ञानिक। आजादी से पहले अंग्रेजों ने कई बार ज्वालामुखी की पहाड़ियों में ज्योति के रहस्य को जानने का प्रयास किया। ऑयल एंड नेचुरल गैस कॉर्पोरेशन लिमिटेड (ओएनजी) के वैज्ञानिकों ने यहां 6 दशक से अभी अधिक समय तक डेरा डाले रखा, लेकिन कामयाबी नहीं मिली।

यह शक्तिपीठ हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले से 30 किलोमीटर दूर ज्वाला देवी का प्रसिद्ध मंदिर है, जिसे जोता वाली माता का मंदिर भी कहा जाता है, क्योंकि यहां किसी मूर्ति की पूजा नहीं होती, बल्कि धरती से निकल रही 9 रहस्यमयी ज्वालाओं की पूजा की जाती है। इन ज्योतियों को महाकाली, अन्नपूर्णा, चंडी, हिंगलाज, विंध्यवासिनी, महालक्ष्मी, सरस्वती, अंबिका, अंजीदेवी के नाम से जाना जाता है। जब कोई आपदा आती है तो यह ज्योतियां पहले ही अलग-अलग रंग में प्रज्ज्वलित होकर संकेत दे देती हैं। 51 शक्ति पीठ में से एक इस मंदिर में देवी को अग्नि के रूप में पूजा जाता है। यह वह शक्तिपीठ है जहां माता सती की जीभ गिरी थी।

इस मंदिर को खोजने का श्रेय पांडवों को जाता है। मंदिर के निर्माण कार्य की शुरुआत राजा भूमि चंद ने की। बाद में इसे पंजाब के महाराजा रणजीत सिंह और राजा संसारचंद ने 1835 में पूरस किया। उनके पौत्र कुंवर नौनिहाल सिंह ने मंदिर के मुख्य दरवाजों पर चांदी के पतरे चढ़वाए थे, जो आज भी दर्शनीय हैं। मां ज्वाला देवी का मंदिर मंडप शैली में निर्मित है।

ज्योति स्वरुप में मां ज्वाला देवी।

मंदिर के मुख्य पुजारी के अनुसार ज्वालामुखी में सदियों से मां ज्वाला की 9 ज्योतियां जल रही हैं। इन ज्योतियों को महाकाली, अन्नपूर्णा, चंडी, हिंगलाज, विंध्यवासिनी, महालक्ष्मी, सरस्वती, अंबिका, अंजीदेवी के नाम से जाना जाता है। जब कोई आपदा आती है तो यह ज्योतियां पहले ही अलग-अलग रंग में प्रज्ज्वलित होकर संकेत दे देती हैं। यहां किसी मूर्ति की नहीं, बल्कि 9 ज्योतियों की पूजा होती है। इन ज्योतियों के ऊपर मंदिर बना है। 51 शक्ति पीठ में से एक इस मंदिर में देवी को अग्नि के रूप में पूजा जाता है। यह वह शक्तिपीठ है जहां माता सती की जीभ गिरी थी।

कहा जाता है कि सती के रूप में जानी जाने वाली आदिशक्ति, प्रथम शक्ति भगवान शिव की पत्नी बनी। एक बार सती के पिता ने भगवान शिव का अपमान किया, सती को यह स्वीकार नही हुआ तो उसने खुद को हवन कुंड मे भस्म कर डाला। भगवान शिव ने जब अपनी पत्नी की मृत्यु के बारे में सुना तो उनके गुस्से कोप दुनिया का सहना पड़ा। उन्होंने सती के पार्थिव शरीर को उठाकर तीनों लोकों में भ्रमण करना शुरू किया।

देवता शिव के क्रोध से कांप उठे और भगवान विष्णु से मदद मांगी। भगवान विष्णु ने सती के शरीर को चक्र के वार से खंडित कर दिया। जिन स्थानों पर टुकड़े गिरे, उन स्थानों पर 52 पवित्र 'शक्तिपीठ' अस्तित्व में आए। ज्वालामुखी में सती की जीभा गिरी थी और देवी छोटी लपटों के रूप में प्रकट हुई। कहा जाता है कि सदियों पहले, एक चरवाहे ने देखा कि अमुक पर्वत से ज्वाला निकल रही है। ज्वालाजी को जोता वाली मंदिर भी कहा जाता है।

कहा जाता है कि बादशाह अकबर ने ज्वाला देवी में धधक रही ज्योतियों को बुझाने के लिए अपने सैनिकों से नहर तक खुदवा दी थी, शेष पृष्ठ 7 पर...

यहां गिरी थी सती माता की जीभ

कहा जाता है कि सती के रूप में जानी जाने वाली आदिशक्ति, प्रथम शक्ति भगवान शिव की पत्नी बनी। एक बार सती के पिता ने भगवान शिव का अपमान किया, सती को यह स्वीकार नही हुआ तो उसने खुद को हवन कुंड मे भस्म कर डाला। भगवान शिव ने

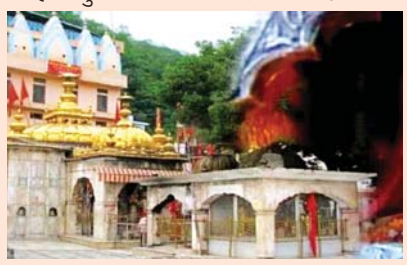

जब अपनी पत्नी की मृत्यु के बारे में सुना तो उनके गुस्से कोप दुनिया का सहना पड़ा। उन्होंने सती के पार्थिव शरीर को उठाकर तीनों लोकों में भ्रमण करना शुरू किया। देवता शिव के क्रोध से कांप उठे और भगवान विष्णु से मदद मांगी। भगवान विष्णु ने सती के शरीर को चक्र के वार से खंडित कर दिया। जिन स्थानों पर टुकड़े गिरे, उन स्थानों पर 52 पवित्र 'शक्तिपीठ' अस्तित्व में आए। ज्वालामुखी में सती की जीभा गिरी थी और देवी छोटी लपटों के रूप में प्रकट हुई। कहा जाता है कि सदियों पहले, एक चरवाहे ने देखा कि अमुक पर्वत से ज्वाला निकल रही है। ज्वालाजी को जोता वाली मंदिर भी कहा जाता है।

वैज्ञानिक भी नहीं खोज पाए रहस्य

देश आजाद होने के बाद ओएनजीसी के वैज्ञानिकों ने 6 दशक से ज्यादा समय तक ज्वालाजी की पहाड़ियों में गैस या तेल होने के प्रमाण खोजने की जदोजहद की। ओएनजीसी ने पहली बार 1959 में ज्वालामुखी व आसपास के क्षेत्रों में कुएं खोदकर यह पता लगाने का प्रयास किया कि आखिर बिना तेल, बाती, घी के ज्योति कैसे जल रही है। ज्वालामुखी के टेढ़ा मंदिर में पहली बार कुआं भी खोदा गया। उसके बाद 1965 में सुराणी में, बग्गी, बंडोल, घीणा, लंज, सुराणी व कालीधार के जंगलों में खुदाई की गई थी, लेकिन कुछ हाथ नहीं लग पाया। थके-हारे वैज्ञानिकों ने अब अनुसंधान बंद कर दिया है।

पांडवों ने की थी मंदिर की खोज

इस मंदिर को खोजने का श्रेय पांडवों को जाता है। मंदिर के निर्माण कार्य की शुरुआत राजा भूमि चंद ने की। बाद में इसे पंजाब के महाराजा रणजीत सिंह और राजा संसारचंद ने 1835 में पूरस किया। उनके पौत्र कुंवर नौनिहाल सिंह ने मंदिर के मुख्य दरवाजों पर चांदी के पतरे चढ़वाए थे, जो आज भी दर्शनीय हैं। मां ज्वाला देवी का मंदिर मंडप शैली में निर्मित है।

...पृष्ठ 8 का शेष

फिर जब बंजारे अपने पशुओं को ढूँढने के लिए निकले तो उन्हें यहां पर एक छोटी लड़की मिली। जब बंजारों ने लड़की से कहा कि उनके पशु गम हो गए हैं तो उसने कहा कि यहां माता के स्थान पर मनोकामना मांग सकते हैं। लेकिन बंजारों में कहा कि हम नहीं जानते कि यहां पर माता का स्थान कहाँ पर है। तब उस लड़की ने एक पत्थर फेक कर संकेत दिया। उसने जिस जगह पर पत्थर फेका था वहां पर माता के दर्शन हुए। इसके बाद बंजारों ने वहां माता की पूरा कि और कुछ समय के बाद उन्हें अपने गुमे हुए पशू मिल गए। अपनी मनोकामना पूरी होने के बाद उन बंजारों ने यहां पर मंदिर बनवाया था। इस घटना की खबर जब लोगों को लगी तो यहां बहुत से लोग मन्नत मांगने के लिए आने लगे। एक अन्य मान्यता के अनुसार विजयासन देवी की यह प्रतिमा लगभग 4 सौ साल पुरानी और स्वयंभू मानी जाती है। पौराणिक मान्यता है कि दुर्गा के

महिषासुरमर्दिनी अवतार के रूप में देवी ने इसी स्थान पर रक्तबीज नाम के राक्षस का वध कर विजय प्राप्त की थी। फिर जगत कल्याण के लिए इसी स्थान पर बैठकर उन्होंने विजयी मुद्रा में तपस्या की थी. इसलिए इन्हें विजयासन देवी कहा गया।

सलकनपुर मंदिर होशंगाबाद से 35 किलोमीटर की दूर पर स्थित है। यहां पर नवरात्री के मौके पर दूर-दूर से पैदल चलकर लोग माता के दर्शन करने के लिए जाते हैं। नवरात्री में यहां एक ही दिन में लाखों भक्त मंदिर में आते हैं। यह मंदिर 1000 फीट की खड़ी पहाड़ी पर स्थित है जहाँ पर जाने के लिए सीढ़ियां, रोपवे और वाहन मार्ग भी है। लेकिन इसके बाद भी कई भक्त पैदल सीढ़ियों से सलकनपुर वाली बिजासन माता के दर्शन करने के लिए जाते हैं। ऐसा माना जाता है कि बिजासन माता के इस मंदिर में जो भी भक्त मनोकामना मानता है वो कभी खाली नहीं जाती। यहां पहाड़ी के ऊपर बिजासन माता अपने दिव्य रूप में विराजमान है। विध्यांचल पर्वत विराजमान बिजासन माता को विध्यवासिनी देवी के नाम से भी जाना जाता है। हिंदू धर्म के पुराणों के अनुसार बिजासन देवी पार्वती का अवतार हैं। जब देवी ने देवताओं की प्रार्थना पर भयंकर राक्षस रक्तबीज का वध किया था तो देवी का नाम बिजासन पड़ा था। आपको बता दें कि बिजासन देवी की पूजा कई लोग अपनी कुल देवी के रूप में भी करते हैं।

● ● ●

...पृष्ठ 3 का शेष

घंटा

यहां जंगल में प्राचीन मंदिर पर रोज गाय के ताजा दूध से मां का अभिषेक करते थे। गजाधर की भक्ति से प्रसन्न होकर सन् 1669 विक्रम संवत में मां ने उन्हें कन्या रूप में दर्शन दिए और साथ चलने के लिए कहा।

गजाधर ने माता से कहा कि उनके पास कोई साधन नहीं है, वह उन्हें अपने साथ कैसे ले जा पाएगा। तब माता ने कहा कि वह जब उनका ध्यान करेंगे और वह प्रकट हो जाएंगी। गजाधर ने सातऊ गांव पहुंचकर माता का आवाहन किया तो देवी प्रकट हो गईं और गजाधर से कहा कि जहां में विलुप्त हो जाऊं वहां मंदिर बनवा देना। इसके बाद कन्या रूप में मां सातऊ के जंगल में जाकर विलुप्त हो गईं। जहां माता विलुप्त हुईं, वहां पांच पत्थर मिले थे। इसके बाद इन पत्थर को समेटकर मां का स्वरूप दिया गया। तभी से जंगल में पहाड़ी पर मां शीतला विराजमान हैं।

ग्वालियर का ये प्राचीन देवी माता मंदिर कभी डकैतों की आस्था का बड़ा केंद्र रहा है। इस मंदिर में डकैत पुलिस को चुनौती देकर घंटे चढ़ाया करते थे। डकैत मां से अपने जीवन के अभय वरदान की मन्नत मांगते थे तो दूसरी ओर पुलिस भी इन डकैतों के अंत करने के लिए शीतला मां की शरण में जाया करती थी। भले ही ग्वालियर-चंबल अंचल में डकैतों का खात्मा हो गया हो लेकिन एक समय में इनका अच्छा खासा आतंक था। 80 से 90 के दशक तक कई दुर्दांत डकैत पुलिस के लिए चुनौती बनते रहे थे। ग्वालियर चंबल अंचल की भोगोलिक स्थिति यहां के बीहड़ और घने जंगलों में डकैतों की तूती बोला करती थी, लेकिन डकैत देवी मां के बड़े भक्त थे। डकैत सातऊ शीतला माता पर माथा टेकने जरूर आया करते थे। इनमें कुख्यात डकैत मोहर सिंह, मलखान सिंह, डाकू माधौसिंह और दयाराम-रामबाबू गडरिया गैंग भी शामिल हैं, जिनके नाम से ही लोग कांप जाते थे। यह डकैत मनोकामना पूरी होने पर यहां चढ़ाते थे।

शहर से 20 किलोमीटर दूर जंगल में विराजमान मां शीतला के दर्शन करने के लिए लोग दूर-दूर से पैदल आते हैं। ऐसा माना जाता है कि लोग पहले मां शीतला पर आकर मन्नत मांगते हैं और मन्नत पूरी होने के बाद पैदल परिक्रमा करते थे। करीब 40 से 50 किलोमीटर दूर से लोग पैदल आकर मां के दर्शन करते हैं। मां शीतला पर आने वाले अलग-अलग तरह की मनोकामना मांगते हैं। जिस पहाड़ी पर मां विराजमान हैं वहां पहाड़ी पर भक्त मां के दर्शन करने के बाद अपने सपनों का घर पत्थरों से बनाकर जाते हैं। कोई तीन मंजिल तो कोई दो मंजिल बनाकर जाता है। कोई टाउनशिप तो कोई बंगला का आकार देकर जाता है। एक तरह से यह मां से कामना होती है कि मां उनको असल रूप में उनके सपनों का घर बनाने में मदद करेंगी। जब जिसकी मन्नत पूरी हो जाती है तो वह जहां भी रहता है वहां से पैदल ही नंगे पैर मां के दर्शन के लिए निकल पड़ता है। नवदुर्गा उत्सव के समय शहर में रात 8 बजे से पैदल यात्रियों के जत्थे निकलने शुरू हो जाते हैं।

वैसे तो शीतला माता मंदिर पर हर दिन एक से डेढ़ हजार लोग पहुंचते हैं, लेकिन सोमवार को यहां मेला लगता है। सोमवार को यहां 20 से 25 हजार लोग पहुंचते हैं। महंत कमल सिंह भगत बताते हैं कि नवदुर्गा उत्सव के दिनों में यहां हर दिन 90 हजार से एक लाख लोग आते हैं। नौ दिन में लाखों भक्त यहां दर्शन करते हैं। महंत कमलसिंह बताते हैं कि 300 से 400 साल पहले जब मां इस स्थान पर विलुप्त हुई थीं, तब पहाड़ी पर एक पेड़ के नीचे मंदिर की स्थापना हुई। उसके बाद धीरे-धीरे मां की कृपा से मंदिर का विस्तार होता चला गया। आजतक किसी से कोई चंदा नहीं लिया। भक्त जो चढ़ावा दे जाते हैं उसे ही मंदिर के विकास में लगा देते हैं। आज मंदिर 5 बीघा इलाके में फेला है। मंदिर में 250 कमरे हैं नवदुर्गा में यहां बाहर से लोग आते हैं और मां का पाठ करते हैं। एक भी रूम खाली नहीं बचता।

● ● ●

...पृष्ठ 6 का शेष

लेकिन यह नहीं बुझी। आखिरकार अकबर को इन ज्योतियों के सामने झुकना पड़ा। मंदिर में उसने सवा मन

सोने का छत्र चढ़ाया। छत्र चढ़ाने के बाद अकबर को अहंकार हुआ। इस अहंकार की वजह से सोना ऐसी धातु में तब्दील हो गया, जिसका आज तक पता नहीं लग पाया है।

देश आजाद होने के बाद ओएनजीसी के वैज्ञानिकों ने 6 दशक से ज्यादा समय तक ज्वालाजी की पहाड़ियों में गैस या तेल होने के प्रमाण खोजने की जदोजहद की। ओएनजीसी ने पहली बार 1959 में ज्वालामुखी व आसपास के क्षेत्रों में कुएं खोदकर यह पता लगाने का प्रयास किया कि आखिर बिना तेल, बाती, घी के ज्योति कैसे जल रही है। ज्वालामुखी के टेढ़ा मंदिर में पहली बार कुआं भी खोदा गया। उसके बाद 1965 में सुराणी में, बग्गी, बंडोल, घीणा, लंज, सुराणी व कालीधार के जंगलों में खुदाई की गई थी, लेकिन कुछ हाथ नहीं लग पाया। थके-हारे वैज्ञानिकों ने अब अनुसंधान बंद कर दिया है। यहां टेढा मंदिर, अबिंकेश्वर महादेव, अर्जुननागा मंदिर, गोरखडिब्बी, लाल शिवालय, राधाकृष्ण मंदिर, तारा देवी, भैरव मंदिर, प्राचीन गणेश मंदिर, अष्टभुजी मंदिर ज्वालामुखी मे दर्शनीय स्थल हैं।

● ● ●

ज्योति बुझाने को अकबर ने खोदी थी नहर

कहा जाता है कि बादशाह अकबर ने ज्वाला देवी में धधक रही ज्योतियों को बुझाने के लिए अपने सैनिकों से नहर तक खुदवा दी थी, लेकिन यह नहीं बुझी। आखिरकार अकबर को इन ज्योतियों के सामने झुकना पड़ा। मंदिर में उसने सवा मन सोने का छत्र चढ़ाया। छत्र चढ़ाने के बाद अकबर को अहंकार हुआ। इस अहंकार की वजह से सोना ऐसी धातु में तब्दील हो गया, जिसका आज तक पता नहीं लग पाया है।

...पृष्ठ 2 का शेष

ईडाणा माता को स्थानीय पूर्व राजा, रजवाड़े अपनी कुलदेवी के रूप में मानते हैं ओर आज भी उनकी पूजा अर्चना करके अपने शुभ कार्यों का शुभारंभ करते हैं।

माता के इस मंदिर में श्रद्धालु चढ़ावे में लच्छा चुनरी और त्रिशूल लाते हैं। लोगों की मान्यता है कि इस मंदिर में जाकर माता के दर्शन करने से पैरालिसिस यानी लकवे जैसी गंभीर बीमारी भी ठीक हो जाती है। जिन लोगों के संतान नहीं होती वह दंपती यहां झूला चढ़ाते हैं। इससे उन्हें संतान सुख की प्राप्ति होती है।

इसी तरह राजस्थान में ही सुजानगढ़ से करीब 15 किलोमीटर दूर 850 फीट ऊंची पहाड़ी पर स्थित दक्षिणमुखी काली माता का मंदिर एक ही शिला पर बना हुआ है। माना जाता है कि यह मंदिर मंत्र सिद्धि और साधना के लिए विख्यात रहा है।

सुजानगढ़ तहसील के डूंगरास आथूणा की पहाड़ी पर दक्षिणमुखी काली माता का मंदिर राजस्थान भर में प्रसिद्ध है, जहां काली माता के ठीक सामने लगी भगवान गणेश की अनोखी प्रतिमा उत्तरमुखी है। खास बात ये है कि इस प्रतिमा में भगवान गणेश का पेट बाहर निकला हुआ नहीं है। मंदिर में लगे शिलालेख के अनुसार 434 साल पहले विक्रम संवत 1646, ज्येष्ठ बदी नवमी को मंदिर की स्थापना हुई थी। नवरात्रि में यहां आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में नौ दिन दूर-दूर से श्रद्धालु आते हैं। यहां अष्टमी को जागरण व नवमी को मेले में भारी भीड़ रहती है।

पहले पहाड़ी पर सीधी चढ़ाई होने के कारण श्रद्धालुओं को प्राचीन मंदिर तक पहुंचने में दिक्कत आती थी। इसलिए 45 साल पहले संवत 2035 में सैंकड़ों साल पहले से प्रज्वलित धूणे के पास नीचे भी मंदिर एक और मंदिर बनाया गया था। कालका माता सेवा समिति व मां भवानी सेवा समिति सहित भामाशाहों व अन्य लोगों के व्यक्तिगत आर्थिक सहयोग से काम करवाने पर मंदिर भव्य रूप में बना है। मंदिर में कालीमाता मंदिर, भैरुजी मंदिर, शिव मंदिर व शिव धूणा है।

सुजानगढ़ से करीब 15 किलोमीटर दूर 850 फीट ऊंची पहाड़ी पर स्थित दक्षिणमुखी काली माता का मंदिर एक ही शिला पर बना हुआ है। माना जाता है कि यह मंदिर मंत्र सिद्धि और साधना के लिए विख्यात रहा है। क्षेत्र में आसपास कई जगह खनन होता है, लेकिन इस पहाड़ी के आसपास ना तो कोई खनन होता है, ना ही इस क्षेत्र के ओरण में को लकड़ी काट कर ले जाता है।

● ● ●

सलकनपुर

पहाड़ी के ऊपर बिजासन माता अपने दिव्य रूप में विराजमान है

सलकनपुर मंदिर होशंगाबाद से 35 किलोमीटर की दूर पर स्थित है। यहां पर नवरात्री के मौके पर दूर-दूर से पैदल चलकर लोग माता के दर्शन करने के लिए जाते हैं। नवरात्री में यहां एक ही दिन में लाखों भक्त मंदिर में आते हैं। यह मंदिर 1000 फीट की खड़ी पहाड़ी पर स्थित है जहाँ पर जाने के लिए सीटियां, रोपवे और वाहन मार्ग भी है। लेकिन इसके बाद भी कई भक्त पैदल सीढ़ियों से सलकनपुर वाली बिजासन माता के दर्शन करने के लिए जाते हैं। ऐसा माना जाता है कि बिजासन माता के इस मंदिर में जो भी भक्त मनोकामना मानता है वो कभी खाली नहीं जाती। यहां पहाड़ी के ऊपर बिजासन माता अपने दिव्य रूप में विराजमान है।

ऊंचे पहाड़ पर माता का दिव्य रूप

सलकनपुर मंदिर मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल के पास सीहोर जिले के बिजासन माता को समर्पित एक प्रसिद्ध मंदिर है जो हर साल नवरात्री के दौरान भारी संख्या में भक्तों को आकर्षित करता है। सलकनपुर मंदिर भोपाल से करीब 70 किलोमीटर दूर स्थित है, जहाँ पर गर्भ गृह में बीजासन माता की एक प्राकृतिक रूप से निर्मित एक मूर्ति है। यहां पर मंदिर परिसर में देवी लक्ष्मी और सरस्वती, और भैरव के मंदिर भी स्थित है। सलकनपुर वाली बिजासन माता का मंदिर 1000 फीट ऊँची एक पहाड़ी पर बना हुआ है। पहले मंदिर तक जाने के लिए सिर्फ सीढियां ही बनी हुई थी जिनकी संख्या एक हजार भी ज्यादा है। अब मंदिर तक ऊपर पहुंचने के लिए वाहन मार्ग और रोपवे भी बना दिया गया है, जिसकी मदद से भक्त आसानी से मंदिर तक पहुंच सकते हैं।

बिजासन माता के भक्त हमेशा से ही यह जानने में बेहद दिलचस्पी दिखाते हैं कि आखिर सलकनपुर मंदिर का निर्माण किसने करवाया था ? ऐसा बताया जाता है कि इस पवित्र मंदिर का निर्माण कुछ बंजारों द्वारा करवाया गया था। यह बात लगभग 300 साल से ज्यादा पुरानी है, जब एक बार पशुओं का व्यापार करने वाले बंजारे यहां पर रुके थे तो उनके पशू एक दम से गायब हो गए थे। शेष पृष्ठ 7 पर...

सलकनपुर का मेला

फरवरी के महीने में सलकनपुर में माघ मेला आयोजित किया जाता है जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु मां विजयासन दरबार में अपनी मनोकामना पूरी होने के बाद जमाल चोटी उतारने के लिए और तुलादान करने के लिए शामिल होते हैं। सलकनपुर माघ मेला एक बहुत बड़ा पशु मेला है। इस मेले में बड़ी संख्या में पशु विक्रेता- क्रेता शामिल होते हैं। इसलिए इस मेले को पशुओं की बिक्री का मेला भी कहते हैं।

मंदिर का इतिहास

मंदिर के महंत प्रभुदयाल शर्मा के मुताबिक चार सौ साल पुराने इस मंदिर में स्थापित देवी की मूर्ति सैकड़ों वर्ष प्राचीन है। मान्यता है कि महिषासुरमर्दिनी के रूप में माँ दुर्गा ने रक्तबीज नाम के राक्षस का वध इसी स्थान पर करके यहां विजयी मुद्रा में तपस्या की। इसलिए यह विजयासन देवी कहलायीं। मंदिर के गर्भगृह में लगभग 400 साल से 2 अखंड ज्योति प्रज्वलित हैं। एक नारियल के तेल ओर दूसरी घी से जलायी जाती है। इन साक्षात जोत को साक्षात देवी रूप में पूजा जाता है। मंदिर में धूनी भी जल रही है। इस धूनी को स्वामी भद्रानंद और उनके शिष्यों ने प्रज्जवलित किया था। तभी से इस अखंड धूनी की भस्म अर्थात राख को ही महाप्रसाद के रूप में दिया जाता है। एक अन्य मान्यता के अनुसार कहा जाता है कि ये मंदिर 300 साल पुराना है। यहां का निर्माण कुछ बंजारों द्वारा करवाया गया था। ये बंजारे पशुओं का व्यापर करते थे। एक दिन वो सभी यहां रुके थे। तभी उनके पशू एकदम से गायब हो गए। जब वह उन्हें ढूंढ़ने निकले तो रस्ते में एक छोटी सी लड़की मिली। बंजारों ने लड़की से कहा की हमारे पशू घूम गए है तो उसने कहा कि यहां माता के स्थान पर मनोकामना मांग सकते हैं। ऐसे में बंजारों ने जवाब देते हुए कहा कि हम नहीं जानते कि यहां पर माता का स्थान कहां पर है। तभी लड़की ने एक पत्थर फेंका और बंजारों को संकेत दिया। उसके बाद माता के दर्शन उन सभी को हुए। यहां माता की पूजा भी बंजारों ने की। उसके बाद उन्हें अपने गुमे हुए पशू मिल गए। मनोकामना पूरी होने के बाद बंजारों ने यहां पर मंदिर बनवाया था। तब से इस मंदिर की मान्यता काफी ज्यादा है। यहां मांगी गई हर मन्नत पूरी होती हैं।